

प्रमुख प्रश्न और उत्तर

- **प्रश्न 1: वृद्धा अपनी झोंपड़ी क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?**

उत्तर: वह बूढ़ी महिला बहुत लंबे समय से उस झोंपड़ी में रह रही थी। उसी झोंपड़ी में उसके एकमात्र पुत्र की मृत्यु हुई थी। उसकी बहू भी एक पाँच साल की छोटी सी बच्ची को छोड़कर चल बसी थी। अब वह पाँच साल की पोती ही उसके बुढ़ापे का एकमात्र सहारा और उसकी यादों का केंद्र थी।

- **प्रश्न 2: ज़मींदार को झोंपड़ी हटाने की आवश्यकता क्यों पड़ी?**

उत्तर: ज़मींदार को अपने महल या अहाते (प्रांगण) का विस्तार करना था, और वह पुरानी झोंपड़ी उसके रास्ते में बाधा बन रही थी। उसने वकीलों को रिश्वत देकर कानूनी दांव-पेंच से उस झोंपड़ी पर कब्जा कर लिया था।

- **प्रश्न 3: वृद्धा ने मिट्टी ले जाने की अनुमति कैसे मांगी?**

उत्तर: वृद्धा ने ज़मींदार से बहुत ही प्रार्थना और विनम्रता के साथ मिट्टी ले जाने की अनुमति मांगी।

- **प्रश्न 4: "झोंपड़ी में तो हज़ारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है..." – इस कथन के द्वारा वृद्धा क्या कहना चाहती है?**

उत्तर: यहाँ केवल मिट्टी की बात नहीं हो रही है। वृद्धा इस प्रतीक के माध्यम से ज़मींदार को यह अहसास कराना चाहती है कि आप मेरी झोंपड़ी और मेरी पुरानी यादें मुझसे छीन रहे हैं।

- **प्रश्न 5: "उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?" – वृद्धा ने यह बात क्यों कही?**

उत्तर: जब ज़मींदार से एक छोटी सी टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई गई, तब वृद्धा ने कहा कि आप एक टोकरी मिट्टी नहीं उठा पा रहे हैं, तो इस गरीब बुढ़िया की झोंपड़ी हथियाने का जो अन्यायपूर्ण नैतिक भार है, उसे आप जीवन-भर कैसे उठा पाएंगे?

- **प्रश्न 6: कहानी का अंत कैसा है?**

उत्तर: कहानी का अंत सुखद और प्रेरणादायक है। अपनी गलती और अन्याय का अहसास होने पर ज़मींदार को गहरा पश्चाताप हुआ। उसने वृद्धा से क्षमा मांगी और उसकी झोंपड़ी उसे वापस लौटा दी।